बाहुबली प्रकाशन

'अर्द्धकथानक' पर आधारित चित्रकथा

कविवर बनारसीदास

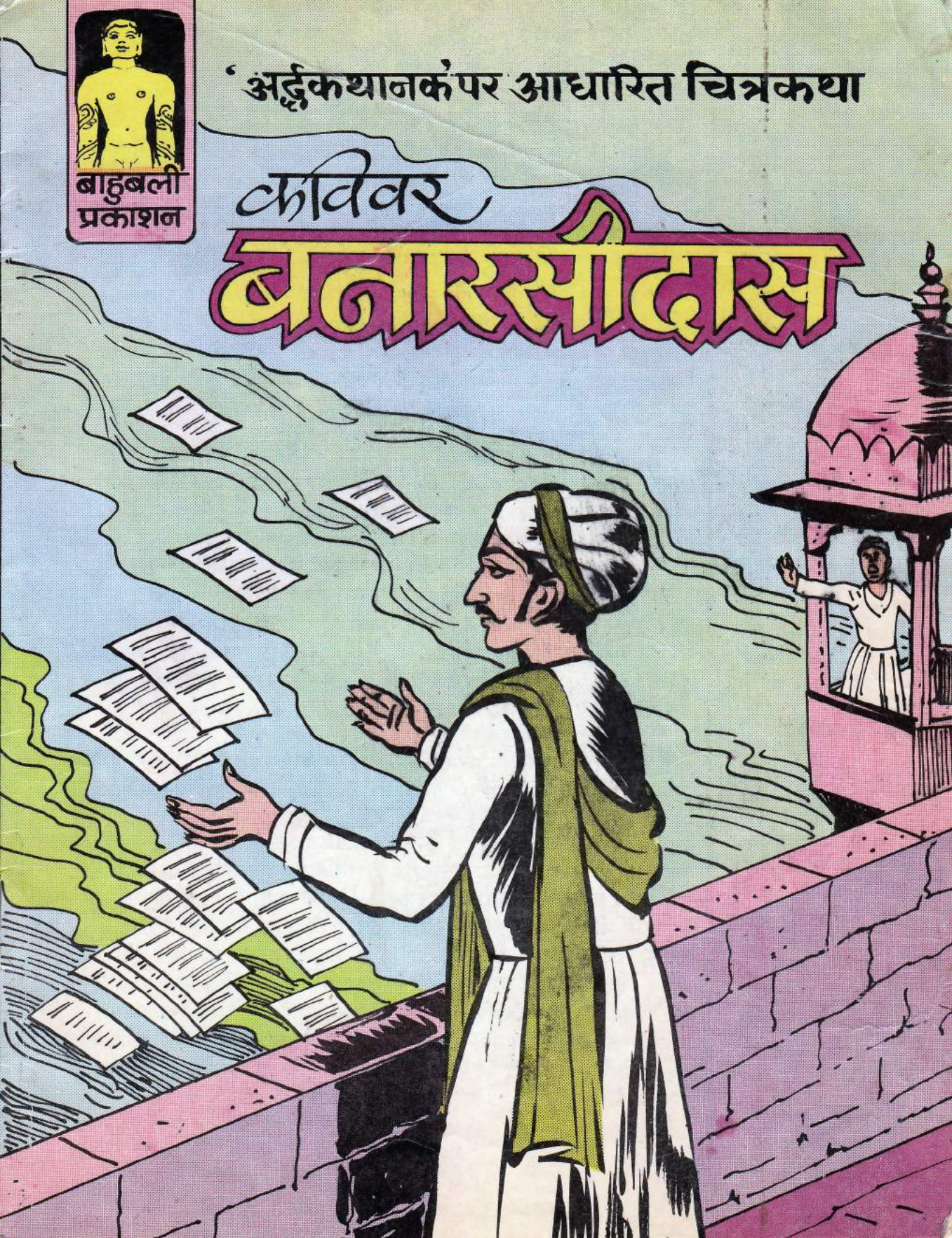

प्रकाशक :

बाहुबली प्रकाशन
लालकोठी
जयपुर-302015

★

मूल्य :
चार रुपया

★

आलेख :
अखिल बंसल एम. ए.

★

चित्रांकन :
अनन्त कुशवाहा

★

प्रथम संस्करण : 5200

★

14 नवम्बर, 1987

कविवर बनारसीदास

भक्तिकालीन हिन्दी साहित्यकारों में कविवर बनारसीदास अग्रगण्य हैं। अपने जीवन के 55 वर्षों के आत्मकथ्य को उन्होंने ज्यों का त्यों "अर्द्ध कथानक" में उतारकर रख दिया। उनकी इस आत्मकथा को हिन्दी साहित्य की सर्वप्रथम आत्मकथा कहलाने का गौरव प्राप्त है।

1586 ई० में जन्में इस कवि ने सम्राट अकबर का अन्तिम समय, जहांगीर का शासन काल और शाहजहां के शासन का प्रारम्भ बहुत निकट से देखा था। कविवर का सम्पूर्ण जीवन मौत बीमारी, अभाव, संघर्ष तथा कड़वे-मीठ अनुभव से परिपूर्ण था। बनारसीदास आशिकी में कई बार मिटे-बने। यहाँ तक कि विदग्ध शृंगार पर एक 'नवरस' ग्रन्थ ही रच डाला, किन्तु जब निर्वेद का अलख उनमें सुलगा तो गोमती की धारा में अपनी उस श्रेष्ठ रचना को प्रवाहित कर दिया।

व्यापार के सिलसिले में उनके जीवन का अधिकांश समय उत्तरप्रदेश के जौनपुर व आगरा में बीता। उस समय की राजनैतिक, सामाजिक स्थिति तथा व्यापारियों की कठिनाईयों का बेलौस वर्णन उनकी आत्मकथा में सन्निहित है। एक के बाद एक रोचक घटनाओं से उनका जीवन भरा हुआ था।

समयसार पढ़ने के उपरान्त दिगम्बर जैनधर्म में उनको अगाध एवं सच्ची श्रद्धा रही। 1636 ई० में उन्होंने समयसार नाटक की हिन्दी में पद्य की रचना की। उनकी प्रसिद्ध के लिए यही ग्रंथ काफी है। उनकी फुटकर रचनाओं का संकलन 'बनारसी विलास' में संग्रहीत है। आगरा में उनकी भेंट महाकवि तुलसीदास से भी हुई थी। जब तुलसीदास ने रामचरितमानस पर उनका अभिमत चाहा तो उन्होंने लिखा—

बिराजै रामायण घट मांहि।
मरमी होय मरम सो जानै, मूरख जानै नाहिं॥

तुलसीदास जी ने भा भ० पार्श्वनाथ की स्तुति में कुछ छन्द बनारसीदास को लिखकर दिए उनमें से एक है—

जिहिनाथ पारस जुगल पंकज, चित्त चरनन जास।
रिद्धि-सिद्धि कमला अजर, राजति भजत तुलसीदास॥

इस वर्ष कविवर बनारसीदासजी का 400 वाँ जन्म दिवस उत्साह पूर्वक देशभर में मनाया जा रहा है अतः उक्त प्रसंग पर कविवर के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं पर प्रकाश डालने के उद्देश्य से यह चित्रकथा प्रकाशित की जा रही है। इसका आलेख समन्वयवाणी के यशस्वी सम्पादक श्री अखिल बंसल ने तैयार किया है तथा चित्रों से सजाया है बालहंस के सम्पादक श्री अनन्त कुशवाह ने। वैसे तो राजस्थान के अग्रणी पत्र राजस्थान पत्रिका में इसका प्रकाशन क्रमश हो चुका है, परन्तु देशभर में प्रचार-प्रसार की दृष्टि से इसका प्रकाशन पृथक से किया जा रहा है। आशा है यह कृति उपयोगी सिद्ध होगी।

–श्रीमती शैल, एम. ए.
प्रकाशिका

बनारसीदास

आलेख : अखिल बंसल
प्रस्तुति : अनन्त कुशवाहा

बनारसीदास श्रीमाल वंशीय जैन थे। इस वंश के लोग रोहतक शहर के निकटस्थ विहोली ग्राम में रहते थे।

ये जैन धर्म स्वीकार करने से पहले राजवंशीय राजपूत थे।

बनारसीदास के पिता का नाम खड़गसेन था।

वे पढ़े-लिखे थे और रत्नों के व्यवसाय में दक्ष थे।

इनके व्यापार का क्षेत्र जौनपुर और आगरा था।

जौनपुर में रहते हुए पुत्र प्राप्ति के लिए चिंतित थे।

पुत्र प्राप्ति की कामना से सपत्नीक खड़गसेन रोहतक की सती माता की पूजा करने वहां कई बार गए।

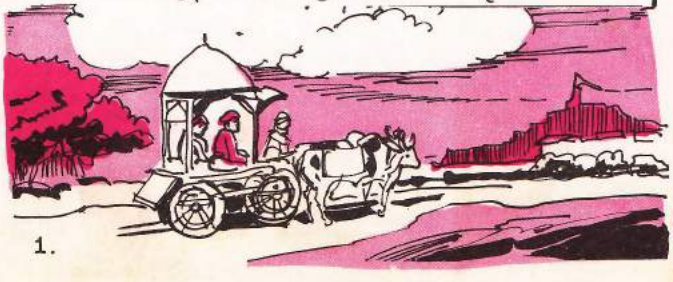

1586 ई. में माघ शुक्ल, एकादशी, शनिवार को एक पुत्र का जन्म हुआ – विक्रमजीत

बालक विक्रमजीत ही आगे चलकर बनारसीदास के नाम से विख्यात हुए।
पुत्र को लेकर खड़गसेन बन्धु-बांधवों सहित सम्मेद शिखर के पार्श्वनाथ भगवान का पूजन-दर्शन करने गए।
यह आपकी शरण है।
मंदिर के पुजारी ने ध्यान लगाने के बाद कहा।-
भगवान पार्श्वनाथ के यक्ष ने कहा है कि यह बालक दीर्घायु होगा।
यक्ष ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ का जन्म जिस नगर में हुआ उसी के नाम पर इस बालक का नाम रखो।
कितना सौभाग्य शाली है यह बालक!
8 वर्ष की आयु में एक ब्राह्मण पण्डित के पास अध्ययन के लिए भेजा
कुशाग्र बुद्धि होने के कारण लिखना-पढ़ना जल्दी सीख गए
इससे अधिक ज्ञान की इच्छा नहीं थी।
1595 ई० में जब बनारसी दास नौ वर्ष के थे। खैराबाद के कल्याणमल ताम्बी की पुत्री के साथ इनका विवाह तय हुआ।

एक वर्ष पश्चात ही जौनपुर में भीषण अकाल पड़ा।

खाद्य पदार्थों का अभाव होगया। मनुष्यों की बड़ी दुर्दशा थी।

दुर्भिक्ष का जोर कुछ कम होने पर बनारसी दास का विवाह सम्पन्न हुआ।।

जिस दिन विवाह कर घर लौटे उसी दिन परिवार में एक जन्म हुआ तो एक दुखद मृत्यु भी हुई।

3.

बनारसी दास की पत्नी का अधिकांश समय मायके में ही बीतता था।

जौनपुर में जौहरियों पर मुसीबत आई।

नगरपाल नवाब किलिज खान।

तेल तो तिलों से ही निकलेगा मुझे बड़ी रकम चाहिए।

जौहरियों पर कोड़े बरसाए गए।

हाय!

अकाल का असर हम पर भी पड़ा है हुजूर। हम इतना धन नहीं दे सकते।

ठीक है। अभी इन्हें जाने दो।

भयभीत जौहरी जौनपुर छोड़ कर विभिन्न दिशाओं में भाग गए।

बनारसीदास के पिता खड़गसेन सकुटुम्ब मानिकपुर के निकट शाहजादपुर गए।

इतनी विपत्ति पर खड़गसेन बच्चों की तरह रोने लगे।

एक व्यवसायी करमचन्द माहर ने आश्रय दिया।

इस समय अन्तराल में बनारसीदास ने पण्डित देवी प्रसाद से अनेकार्थ नाममाला...

4.

ज्योतिषशास्त्र, अलंकार तथा कोकशास्त्र आदि का अध्ययन किया।

अध्यात्म के प्रखर पण्डित मुनि भानु चंद से जैन धर्म के मूल-ग्रन्थ पढ़ने लगे।

शाहजादपुर में रहते हुए बनारसीदास अध्ययन-मनन के साथ साथ व्यापार में भी रुचि लेते थे।

वातावरण ठीक होने पर इनका परिवार जौनपुर वापस आगया।

इनका लेखन कार्य भी प्रारंभ हो चुका था।

युवा होते बनारसीदास के कई रूप हो गए थे।

उनकी रुचि दिन प्रति दिन लेखन में बढ़ती गई।

मनहर दोहा-चौपाइयों में नवरस पर काव्य। विशेषत: सम्भोग प्रधान वर्णन।

5.

बनारसी दास 'आशिकी' में डूब रहे थे।

मैं तुम्हारे लिए ये रत्न पिता जी की नजर बचा कर चुरा कर लाया हूं।

अश्लील कविताएं

अहा.. अहा! वाह क्या वर्णन किया है! मोहिनी का रूप साकार कर दिया है

प्रेम-वासना में लिप्त, बनारसी दास का असंयमित जीवन लगभग दो वर्ष चला

उम्र तो केवल 15 वर्ष थी लेकिन शायद जल्दी जवान हो गए थे।

उन्हें पता नहीं था। कुसंगति और कुव्यसनी के कारण उन्हें गर्मी या उपदंश रोग लग गया था।

बनारसी दास, पत्नी को विदा कराने खैराबाद गए।

वहीं रोगाक्रांत हो गए।

क्या बात है स्वामी?

आह!

शरीर में असंख्य दुर्गंधित घाव होगए। बाल झड़ने लगे। इतने कुरूप होगए कि लोग दूर रहने लगे।

यह मेरे पापों का फल है।

बनारसीदास की पत्नी और सास ही उनकी थोड़ी-बहुत देखभाल करती थीं।

कोई फायदा नहीं हो रहा था।

आह..आह!

एक नाई वैद्य ने देखा।

मैं इलाज करूंगा। इन्हें भुना चना और बिना नमक का भोजन देना होगा।

छः मास पश्चात बनारसी दास रोगमुक्त हो सके।

नाई महाराज, आपने मुझे नया जीवन दिया है।

आप ठीक होगए, मेरी मेहनत सफल हो गई।

घर लौटने के पश्चात वे फिर पहले जैसा असंयमित जीवन बिताने लगे।

पत्नी के रहते भी विषय-सेवन, फैशन परस्ती और आवारागर्दी में कोई कमी नहीं आई थी।

आत्मीयजनों ने समझाया

प्रेम का व्यसन छोड़ दो। ज्ञानार्जन ब्राह्मण चारणों का कार्य है। व्यापारी के लड़के हो व्यापार में मन लगाओ।

अधिक पढ़ने-लिखने वालों को भीख मांगनी पड़ती है।

गुरुजनों की बातों का बनारसी दास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

मूल्यवान पत्थरों का व्यापार करते ये लोग भी शुष्क पत्थर हो गए हैं।

सन् 1604 ई.

एक पुत्री हुई पर कुछ दिनों में ही उसका देहांत होगया।

बनारसीदास की कोई भी संतान अधिक दिन जीवित नहीं रही। शायद उनके यौन-रोग के कारण ही ऐसा हुआ होगा।

अपनी दुष्प्रवृत्तियों के कारण वह पुनः बीमार पड़ गए।

वैद्य की राय से 20 दिनों तक बनारसी दास को भोजन नहीं दिया गया।

रोटी!.....मुझे रोटी खिलाओ!

नहीं। ऐसी हालत में रोटी जहर है।

मुझे खाने को चाहे मत दो, किन्तु केवल रोटी मेरी आंखों के सम्मुख रख दो।

ऐसे तो मैं रोटी के बारे में सोच सोच कर ही पागल हो जाऊंगा।

आधा सेर वजन की दो मोटी रोटियां उन्हें दी गईं।

लीजिए, खाइएगा बिल्कुल नहीं!

बनारसी दास ने दोनों रोटियां तकिए के नीचे रख लीं।

रात को जब सब सो रहे थे।

मैं चाहे मरूं या जियूं। इन रोटियों को जरूर खाऊंगा।

आश्चर्य, वे सबेरे ठीक होगए थे।

क्या!...दो मोटी रोटियों ने तुम्हें ठीक कर दिया!

आर्थिक दृष्टि से घर में अस्थिरता थी। बनारसीदास बहुत चिन्तित रहते थे।

व्यापार भी एक तरह का जुआ है।

लाभ शुभ

एक सन्यासी से भेंट हुआ।

बच्चा, मैं एक ऐसा मंत्र जानता हूं जिसे नियमित अपने से.....

...प्रचुर धन प्राप्त होगा।

अटूट निष्ठा लेकर गोपनीय ढंग से मंत्र का जाप करना होगा।

करूंगा योगीराज

8.

एक वर्ष पश्चात प्रतिदिन अपने द्वार पर एक सोने की मोहर पाओगे

बनारसी दास ने एक वर्ष तक मंत्र का चुपचाप जाप किया

...कभी घर में कभी गोमती के एकान्त तट पर।

मंत्र के जाप से मोहरें कहां मिलने वाली थीं।

मैं मूर्ख बना।

कुछ दिनों बाद एक और योगी मिला।

यह शंख, भगवान महादेव का प्रतिरूप है। इसकी नित्य.....

...पूजा करोगे तो शिवपुरी मिलेगा।

सारी मनोकामना पूरी होगी।

बनारसीदास अष्टद्रव्य से गुप्तरूप से शिव और उनके शंख की पूजा करने लगे।
शिव.. शिव..
सन 1604 ई०। बनारसीदास के पिता खड़गसेन विशाल संघ के साथ सम्मेद शिखर की यात्रा पर गए।
आचरण और भोजनादि में भी पूर्ण संयम रखते।
पिता की अनुपस्थिति में बनारसीदास की बन आई
मां मैं बनारस जाऊंगा
अभी नहीं जाना है।
मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि जब तक बनारस नहीं जाऊंगा, दूध, दही, घी, चावल आदि का सेवन नहीं करूंगा।
अजीब हठी है यह।
बनारसीदास की प्रतिज्ञा के छ: माह बाद कार्तिक पूर्णिमा आई।
तीर्थ यात्रियों के साथ बनारसीदास भी बनारस चले।
गंगा स्नान करने गए।
9.
बनारसीदास ने भक्तिभाव से शिव की पूजा की।
मैंने जिन जिन वस्तुओं को छोड़ने की प्रतिज्ञा की थी, उन्हें ही चढ़ा रहा हूं।
बनारस में भी कंचन-कामिनी को नहीं भूले थे।
जौनपुर के जौहरी हो न?

सन् 1605 ई॰ बनारसीदास बनारस से जौनपुर लौट आए थे तभी....

बादशाह अकबर का इन्तकाल होगया

अरे हमारे आका मर गए रे!

सम्राट अकबर का देहांत होगया!

Oooo

बनारसीदास थर थर कांपने लगे!

अकबर के देहांत की खबर सुनकर बनारसीदास सीढ़ियों से लुढ़क पड़े।

हे भगवान!

आ आह!

10.

इनका रक्त बहना रोको।

उपाय करता हूं!

अकबर की मृत्यु से सारा नगर आतंकित हो उठा था।

हे भगवान

या अल्लाह

सोना-चांदी सब छिपालो! अराजकता फैलनेवाली है!

आगरा से यह खबर आने के बाद कि राजधानी में शांति है और...

..नूरुद्दीन जहांगीर ने पदवी धारण की है, लोगों में व्याप्त आतंक खत्म हुआ।

सेठजी, अब गोमती पार कर भागने की जरूरत नहीं। संकट टल गया।

बनारसीदास सोच रहे थे।

मैं शिव का अनन्य भक्त और उपासक था किन्तु मैं सीढ़ी से गिर कर घायल हुआ तो उन्होंने रक्षा नहीं की।

मैं अब शिव रूपी शंख की पूजा नहीं करूंगा।

एक दिन गोमती के पुल पर।

बनारसी, तुमने तो प्रेम भरी कविताओं का नवरस ग्रन्थ रच डाला है....

...इस मनोरम स्थान पर उनका रसास्वादन कराओ।

11.

बनारसी ने नारी-सौन्दर्य का क्या खूब वर्णन किया है!

मैंने मिथ्या सौन्दर्य का पूरा ग्रन्थ ही रच डाला है।

इसके पन्ने गोमती के वक्ष में समा जाएं यही ठीक है।

अरे..अरे! यह क्या किया!

हाय! अब तो उस पांडुलिपि को समेटना असंभव है!

नवरस ग्रन्थ के पन्ने नदी में फेंक दिए!

मैं अब ऐसी रचनाएं नहीं करूंगा।

अब अपना मन नैतिक और धार्मिक चिन्तन में लगाऊंगा।

बनारसीदास बात-व्यवहार में एक सज्जन हो उठे थे।

मैं आपको प्रणाम करता हूं।

उनकी चरित्रहीनता से जो लोग उन्हें धिक्कारते थे वे अब प्रशंसा करने लगे।

अरे, बनारसीदास तो एकदम बदल गया है।

खड्गसेन इन्हें व्यवसाय के लिए आगरा भेजने की तैयारी करने लगे।

इन रत्नों और वस्तुओं को लेकर तुम्हें पूरी जिम्मेदारी से जाना है

यथासंभव अधिक लाभ प्राप्त करना।

इटावा पहुंचे तो आकाश मेघाच्छन्न हो उठा था।

मूसलाधार पानी बरसने लगा।

घनघोर वर्षा में बनारसीदास सहित सब आश्रय के लिए इधर-उधर दौड़े।

कोई इन्हें आश्रय देने को तैयार नहीं था।

तेज ठंढ, कीचड़, अंधेरा... बनारसीदास की हालत दयनीय थी

नगर प्रवेश द्वार पर एक झोपड़ी थी उसमें कुछ पहरेदार बैठे थे।

भाग जाओ!

सर छुपाने की जगह नहीं मिली तो मैं मर जाऊंगा।

दया करिए। हम वणिक हैं। रात भर के लिए आश्रय खोज रहे हैं। नगर में कहीं जगह नहीं मिली।

हम पहरेदार यहां सेजा रहे हैं। झोपड़ी का मालिक आए तो उससे विनती कर लेना।

यह मेरी झोपड़ी है। रोज रात को मैं यहां सोता हूं। निकलो बाहर नहीं तो धाबुक मार मार कर बाहर करूंगा।

झोपड़ी का मालिक आया।

अंधेरा, ठंढ, वर्षा देख कर उसे दया आगई।

ठहरो, तुम लोग बेसहारा और भले दिखते हो।

मैं तो खाट पर सोऊंगा, तुम लोग चाहो तो खाट के नीचे टाट पर सो सकते हो।

किसी तरह रात बीती।

दूसरे दिन बनारसी दास आगरा पहुंचे।

13.

पक्का व्यवसायी न होने के कारण उन्हें माल बेचने में भारी नुकसान हुआ।

बनारसीदास का अभाग्य - मोती, माणिक, नगीने कहीं खोगए या गिर गए।

पायजामे के नेफे में तो रखे थे।

इतना अफसोस हुआ कि बनारसी दास बीमार पड़ गए।

एक माह तक बीमार रहे।

अब मैं समझा वणिक का प्राण धन में क्यों रहता है।

बनारसीदास के माता-पिता को व्यापार की क्षति का पता चला।

उस कुपूत ने तो मुझे डुबा ही दिया।

आगरा में बनारसीदास के पास जो कुछ बचा था उसे बेच कर खा गए।

फिर घर से बाहर निकलना बंद हो गया।

बनारसीदास संध्या को अपने घर पर इकट्ठा हुए दस-बारह आदमियों को...

...मधुमालती और मृगावती प्रेमगाथा गाकर सुनाते थे।

श्रोताओं में कचौड़ी बेचने वाला एक हलवाई था।

वाह महाशय! आनंद आगया।

बनारसीदास अपने श्रद्धालु श्रोता हलवाई से कचौड़ी उधार लेकर खाते थे।

उधार ले रहा हूं।

आज भी एक सेर तौल देना।

बस ऐसे ही कचौड़ियां खाकर दिन बिता रहे थे।

शाम को घर पर सुनने जरूर आना।

एक माह तक उधार खाने के बाद इनसे नहीं रहा गया।

हलवाई बन्धु, मैं आपको अपनी हालत बताता हूं।

आप मेरे यहां ज्ञान की बातें व गायन सुनने आते रहे हैं पर मेरी हालत नहीं जानते होंगे।

बनारसी दास ने हलवाई को बताया।

इस तरह मैं तुमसे कचौरी उधार लेकर दिन बिता रहा हूं।

आप भले हैं। जब हो सके उधार चुकता कर दीजिएगा। मैं किसी से जिक्र नहीं करूंगा।

इसी तरह छः माह बीत गए

हलवाई बंधु ने 20 रु० तक उधार देने को कहा है।

बनारसीदास के श्वसुर पक्ष के रिश्तेदार ताराचंद तांबी इन्हे अपने घर लेगए।

धर्मदास की भागीदारी में इन्होंने फिर व्यवसाय शुरू किया।

जितना कमाया उतना खर्च हो गया।

हलवाई का 15रु० का उधार चुका दिया।

मैंने कहा था आप भले आदमी हैं।

दो वर्ष का हाड़-तोड़ श्रम व्यर्थ गया।

एक कानी कौड़ी भी नहीं बची।

निकसी चोंथी सागर मथा।
भई हींग वाले की कथा।
करी मसक्कत गई अकाथ
कौड़ी एक न लागी हाथ।

अरे उस पोटली में क्या है?

आठ मोती!...हे भगवान, डूबते को सहारा मिला।

15

बनारसीदास अपनी ससुराल खैराबाद पहुंचे।

पत्नी से सारी आपबीती कही।

मेरे पास के ये २०रु० रखो। मां से भी मांगती हूं।

मां ने चुपचाप ये २००रु० दिए हैं। आगरा जाकर फिर से व्यापार शुरू करो।

मुझमें आत्म-विश्वास फिर लौट आया है।

बनारसीदास नए उत्साह से कार्य करने लगे।

व्यापार के लिए वस्तुएं खरीदने और....उन्हें विक्रय के लिए तैयार करवाने में लग गए।

इन कपड़ों को अच्छी तरह धोना। आगरा में बेचना है।

पुनः आगरा में व्यवसाय शुरू किया।
कपड़े के व्यापार में घाटा हुआ।
यह कपड़ा देखिए...
घटिया है। बेकार ही इसे धुलवा कर और ढो कर ले आए।
... दो रचनाएं 'अजितनाथ के छंद' और 'नाममाला' लिखने में व्यस्त हो गए।
अब समझ में आता है कि रत्न-जवाहरातों के धन्धे में ही लाभ संभव है।
16
व्यापार में जो थोड़ा लाभ हुआ वह खर्च हो गया और बनारसी दास फिर फक्कड़ हो गए।
जमा-खर्च बराबर।
बनारसीदास अपने मित्र नरोत्तमदास से मिले।
मैं तो दिवालिया हो गया हूं। न हाथ में पैसा, न ठौर-ठिकाना।
मित्र, तुम मेरे भाई की तरह हो। मेरे घर पर ही रहो।
नरोत्तम दास, उनके श्वसुर और बनारसीदास काम के सिलसिले में पटना चले।
शाहजादपुर से एक हमाल करके तीनों पैदल ही चले।
कैसी तेज चांदनी खिली है। सबेरा होने में ज्यादा देर नहीं होगा।
चांदनी के भ्रम में जल्दी निकल पड़े थे। अंधेरा गहराया। रास्ता भूल कर घने जंगल में पहुंच गए।
रास्ता भूल गये।

हमाल (कुली) गठरी फेंक कर भागा।
मैं तो इस जंगल में नहीं रुकूंगा।
अरे ठहर! ठहर! . . . भाग गया दुष्ट।
अब हम क्या करें? गठरी तो भारी है।
तीन हिस्सा करके, ले चलें।
आधी रात का समय था। बनारसीदास, नरोत्तम व उनके श्वसुर रेते कलपते जंगल मे आगे बढे जा रहे थे।
जंगल में डाकुओं का अड्डा।
कौन है वहां?
अरे बापरे! डाकू!
प्राण नही बचेंगे
डाकू सरदार को अपनी ओर आते देख कर बनारसीदास को एक युक्ति सूझी।
शः.. डरना मत।
ईसावास्यमिदं सर्वम् यत्किंच्जगत्याम् जगत ..... ब्राह्मण का आशीर्वाद है।
पांव लगता हूं पण्डित-जी, आप तो हमारे गुरू हैं।
मेरी कुटिया पवित्र कीजिए।
आप लोग जंगल में इतनी रात को.....
हम रास्ता भूल गए हैं यजमान।
कोई बात नहीं। रात्रि विश्राम कर लीजिए, कल हम आपको रास्ता बता देंगे।
धन्यवाद श्री मान
17

अरे बाप रे! मेरी छाती तो धक धक कर रही है।
डाकुओं को जरा भी संदेह होगया कि...
...हम ब्राह्मण नहीं, व्यापारी हैं तो काट डालेंगे।
रात के अंधेरे में उन्हें पता नहीं चला पर अब जल्दी से ब्राह्मण बनने का उपाय करें।
बनारसीदास ने सूत निकालकर तीन जनेउ बनाया।
ब्राह्मण बिना जनेउ कैसा दिखेगा।
गीली मिट्टी से तीनों ने बड़े से तिलक बनाए।
अब ठीक है।
भय से कांपते किसी तरह रात बिताई।
सरदार अपने अनुचरों सहित दर्शन करना चाहते हैं।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव....
...मेरा आशीर्वाद है।
आइए मैं जंगल से बाहर निकलने का रास्ता दिखा देता हूं।
18
किधर जाना चाहेंगे?
फतैपुर।....हमें फतहपुर जाना है।
उन वृक्षों के उस पार फतैपुर है।
अच्छा चलता हूं।
दीर्घजीवी भव

जान बची। किसी जन्म का पुण्य काम आया।

फतहपुर, इलाहाबाद होते हुए बनारसीदास जौनपुर लौटे।

इलाहाबाद में मेरी आपबीती सुन कर पिताजी को गश आ गया था।

व्यापार के सिलसिले में बनारस गए।

भगवान पार्श्वनाथ के मंदिर में कुछ प्रतिज्ञाएं की।

मैं कुछ वस्तुओं का त्याग करूंगा।

बनारस में दुखद सूचना मिली।

नवजात शिशु के साथ पत्नी का देहान्त होगया।

चिट्ठी देखूं

दुखद समाचार के साथ पुनर्विवाह का प्रस्ताव भी था।

मेरे श्वसुर ने अपनी दूसरी कन्या का विवाह मुझसे तय कर दिया है।

दोनो सूचनाएं एक पत्र में।

मेरी स्थिति तो लुहार-संडासी की तरह हो गई है जो अग्नि में और एक बार जल में जाती है।

19

बनारसीदास ने नरोत्तमदास के साथ मिलकर अपने व्यवसाय में मन लगाया।

विभिन्न मुहल्लों में घूमते घूमते मैं तो पस्त हो गया।

जौनपुर, वाराणसी और पटना इनका व्यापार क्षेत्र था।

... और व्यापारी को लोग समझते हैं आसानी से धन कमा लेता है।

जौनपुर का नवाब अमीर चीनी किलिज खान बनारसीदास पर कृपालु था।

मेरी ओर से यह सिरोपा कुबूल करो।

किलिज खान ने बनारसीदास से 'नाममाला', 'छन्दकोश' और 'श्रुतबोध' पढ़ा।

सुभान अल्लाह। इल्म हासिल करना तो खुदा की इबादत है।

सन् 1618 ई० में दुर्दांत अमीर आधानूर जौनपुर के शासक के रूप में आया।

मुझे पैसा चाहिए और इन तिजारती लोगों को निचोड़ने से ही पैसा मिलेगा।

अमीर आधानूर ने जौहरियों, सर्राफों बनियों आदि को बहुत सताया।

इन्हें और कोड़े लगाओ तब जवाहरात उगलेंगे।

दया दया

सर्वत्र आतंक व्याप्त गया। धनिक लोग घर छोड़ कर भागने लगे।

क्या मुसीबत आई है!

बनारसीदास भी कुछ लोगों के साथ भाग रहे थे।

ठहरो ठगों! भाग कहां रहे हो?

तुम ठगों के लिए हम शूलियां भी लाए हैं।

पूछताछ शुरू हुई।

तुम दोनो कौन हो?

हम मधुरावासी ब्राह्मण हैं हुजूर

और तुम?

मैं बनारसीदास जौहरी हूं। जौनपुर में मेरा व्यवसाय है।

20

यह माहेश्वरी और मैं दोनों भद्र नागरिक हैं।

इस बरी शहर में आप दोनों को कोई जानता है?

मेरे छोटे भाई के साले यहां रहते हैं। पहचान करा सकता हूं।

साहू, आपको जो कष्ट हुआ उसके लिए क्षमा करें।

पहचान होने के बाद।

मथुरावासी ब्राह्मण चिंतित थे।

हमारे रुपए छिन गए। हमारे पास कुछ नहीं बचा।

आपकी जान बच गई यही बहुत है।

हम दोनों कंगाल होगए हमें कुछ रुपए दो।

पुनः यात्रा शुरू हुई। यमुना नदी के तट पर पहुंचे।

नहीं तो यमुना में डूब कर प्राण दे देंगे।

अच्छी मुसीबत है।

ये ब्राह्मण तो रो रहे हैं

हाय.. हाय!

21

बनारसी दास और माहेश्वरी ने ब्राह्मण को कुछ रुपए दिए।

आपने हमें आत्मघात से बचा लिया।

हिसाब-किताब खत्म करने के लिए साहू सबल सिंह मोधिया के पास गए पर वे तो अपने वैभव में मस्त थे।

साहू मोधिया के पास जाते बनारसी दास को एक सप्ताह होगया लेकिन उनका काम नहीं बन रहा था।

आज भी उन्हें फुर्सत कहां है।

अंत में अंगशाह के प्रयत्न से बहियों पर हस्ताक्षर हुआ।

साझेदारी के बंधन से मुक्त होकर बनारसी दास को प्रसन्नता हुई।

आह, चिन्ता मिटी।

आगरा में पहला प्लेग फैला।

गांठ रोग फैल रहा है। लोग धड़ाधड़ मर रहे हैं।

इसका कोई उपचार नहीं है। शहर छोड़ कर भागो।

बनारसी दास ने भी आगरा छोड़ कर एक ग्राम में आश्रय लिया।

आगरा से महामारी खत्म हुई तो बनारसीदास तीर्थ यात्रा के लिए निकल पड़े।

उन्होंने जैन साहित्य का अधिकाधिक अध्ययन किया।

ये दुर्लभ मूल पांडुलिपियां हैं।

उनका पुनर्विवाह हुआ किन्तु संतानोत्पत्ति के बाद पुनः पत्नी, पुत्र का देहांत होगया

बनारसीदास का मन विरक्त होने लगा।

लोगों के आग्रह से उन्होंने तीसरी शादी की।

कोई नई बात नहीं है। मान जाओ।

मेरी भी राय है।

उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया जब 'समयसार' पढ़ा।

अब दिगम्बर जैन धर्म में मेरी आस्था दृढ़ होगई है।

बनारसीदास का सारा समय आध्यात्म-चर्चा और लेखन में व्यतीत होने लगा।

तीसरी पत्नी भी नहीं रही। जैसे सारा पारिवारिक बंधन ही टूट गया।

लेखन, अनवरत लेखन चलता रहा।

'सूक्ति रत्न माला', 'शिव-पच्चीसी', 'राम-रावण अन्तर' 'सहस अठोत्तर नाम' आदि बनारसी दास की उस समय की उल्लेखनीय रचनाएं हैं।

सबसे महत्वपूर्ण रचना है 'समयसार नाटक'। इसमें ७२१ पद हैं।

बनारसी दास ने 55 वर्ष की आयु में अपनी आत्म कथा 'अर्द्धकथानक' लिखी।

एकबार उनकी भेंट महाकवि तुलसीदास से हुई थी।

बनारसी दास के प्रति वात्सल्य भाव से तुलसीदास ने भगवान पार्श्वनाथ पर...

कुछ पंक्तियां लिखकर उन्हें भेंट किया था।

सन-1643 ई। अचानक गला रुंध जाने से वाक् शक्ति चली गई।

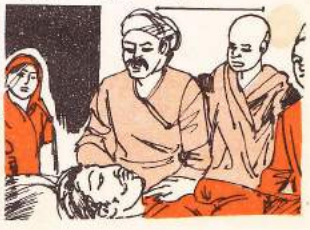

बाहुबली प्रकाशन का आगामी आकर्षण

कहानकथा : महानकथा

(पूज्य कान जी स्वामी के सम्पूर्ण जीवन पर आधारित मार्मिक चित्रकथा)

मूल्य ४) रुपया

आलेख - अखिल बंसल चित्रांकन - अनन्त कुशवाहा